पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशितः 01.10.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

।। ओ३म् ।।

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दिल्ली चलो आर्यो
योग निष्ठ संन्यासी
स्वामी दिव्यानन्द जी का
अमृत महोत्सव
रविवार, 16 नवम्बर 2014
प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक
योग निकेतन,वैस्ट पंजाबी बाग,दिल्ली
–डा.अनिल आर्य,संयोजक

वर्ष-31 अंक-9 आश्विन-2071 दयानन्दाब्द 190 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2014 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशितः 1.10.2014, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

।। ओ३म् ।।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् प्रस्तुत करता है

सहयोग : भारत विकास परिषद् पीतमपुरा शाखा

131 वें महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में संगीत संध्या

एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम

शुक्रवार, 24 अक्तुबर 2014, सायं : 4.00 से 8.00 बजे तक

स्थानः **दिल्ली हाट जनकपुरी** (वीरेन्द्र नगर के सामने), दिल्ली

(मैट्रो स्टेशन जनकपुरी ईस्ट से फीडर बस सेवा उपलब्ध)

यज्ञः सायं 4.00 से 5.00 बजे तक ब्रह्माः आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी

मुख्य यजमानः श्रीमती एवं श्री वेदप्रकाश, दिनेश आहूजा, तिलक चान्दना, बलदेव सचदेवा

–: गायक कलाकार :–

नरेन्द्र आर्य ''सुमन'' * सुदेश आर्या * अंकित उपाध्याय

मुख्य अतिथि : **डॉ. जगदीश मुखी** (विधायक व पूर्व वितमंत्री दिल्ली सरकार)

अध्यक्षता : **श्री प्रदीप तायल** (पाईटैक्स ज्वैलर्स, नेताजी सुभाष पैलेस, पीतम पुरा)

विशिष्ट अतिथि : श्री आनन्द चौहान, श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री प्रभात शेखर, श्री प्रद्युम्न राजपूत (विधायक), रजनी ममतानी (पार्षद), श्री सुभाष आर्य (नेता सदन, दक्षिण दिल्ली), मीना ठाकुर (पूर्व पार्षद), आशीष सूद (पार्षद), यशपाल आर्य (पार्षद), सुभाष कपुर, सुरेश अग्रवाल, घनश्याम गुप्ता, राजकुमार जैन, राजेश बंसल, नीरज रायजादा, अमित नागपाल, दीपक सेठिया, सुरेन्द्र कोहली, ब्रह्म प्रकाश मान

'आर्य महिला रत्न' अवार्ड से सम्मानित होंगे

श्रीमती किरण जौली	श्रीमती गीता देवी	श्रीमती सविता बत्रा
श्रीमती सुरक्षा गक्खड़	श्रीमती विनिता चावला	श्रीमती अनु चौहान
श्रीमती सत्यशिला सक्सेना	श्रीमती ऊषा आर्या	श्रीमती मोहिनी देवी आर्या
श्रीमती कान्ता बत्रा	श्रीमती सविता कपूर	श्रीमती वसुधा कपूर
श्रीमती कंचन कथूरिया	श्रीमती शबनम गुलाटी	श्रीमती सोनल सहगल

आमंत्रित आर्य नेताः सर्वश्री मुन्शीराम सेठी, सोमदत्त महाजन, क.जे.एस. रैना, रवि चड्डा, राजेन्द्र लाम्बा, ओमप्रकाश घई, श्री कृष्ण बवेजा, रमेश कुमारी भारद्वाज, रविदेव गुप्ता, चतरसिंह नागर, रविन्द्र मेहता, डा. जगदीश कश्यप, वरूणेन्द्र कथूरिया, श्रीपाल आर्य, टी.आर. मित्तल, सुरेन्द्र गुप्ता, एस.के. सचदेवा, प्रवीन आर्य, यशपाल आर्य, सुनील गुप्ता, गायत्री मीना, लक्ष्मी सिन्हा, जितेन्द्र डावर, सुरेन्द्र शास्त्री, रमेश गाडी, अमरनाथ बत्रा, लाजपतराय रहेजा, जवाहर भाटिया, अमरनाथ गोगिया, महेन्द्र मनचन्दा, ओम सपरा, प्रेम छाबड़ा, रणसिंह राणा, विश्वनाथ आर्य, चन्द्रमोहन खन्ना, ऊर्मिला आर्या, अर्चना पुष्करना, अनिता कुमार, संतोष वधवा, राजकुमार अग्रवाल, महेंन्द्र बूटी, पुष्पलता वर्मा, आदर्श सहगल, नीता खन्ना, विजयारानी शर्मा, अन्जू जावा, नरेन्द्र कालरा, अमीरचन्द रखेजा, सुशीला सेठी, माता स्वर्णा गुप्ता, मायाराम शास्त्री, चौ. रघुनाथ सिंह यादव, भारतभूषण धूपड़, सोहनलाल मुखी, अमरसिंह सहरावत, विजय भास्कर, प्रवीन तायल, शीला ग्रोवर, भगत सिंह राठी, वीरेन्द्र मल्होत्रा, प्रकाश आर्य, राज मेहन, शांता तनेजा, भारतभूषण साहनी, डॉ. डी.के. गर्ग, राजीव कुमार परम, दिनेश आर्य

ऋषि लंगर आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

निवेदक

डॉ. अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामंत्री	रामकुमार सिंह राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया स्वागत अध्यक्ष	रामकृष्ण सतीजा स्वागत अध्यक्ष
यशोवीर आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	कृष्णचन्द पाहुजा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राकेश भटनागर राष्ट्रीय मंत्री	संतोष शास्त्री-सुरेश आर्य राष्ट्रीय मंत्री	अजय तनेजा स्वागत मंत्री
दुर्गेश आर्य राष्ट्रीय मंत्री	धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	देवेन्द्र भगत प्रेस सचिव	जीवनप्रकाश शास्त्री-डॉ. मुकेश सुधीर-वेदपाल आर्य प्रबंधक गण	

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली 110007 : दूरभाष : 9810117464, 9013137070, 9312406810

Website: www.aryayuvakparishad.com, • aryayouthgroup@yahoogroups.com
E-mail: aryayouthn@gmail.com • join-http://www.facebook.com/group/aryayouth

बौद्ध-जैनमत, स्वामी शंकराचार्य और महर्षि दयानन्द के कार्य

महाभारत काल के बाद देश–विदेश में सर्वत्र अज्ञान फैल गया था। शुद्ध वैदिक धर्म शुद्ध न रह सका और उसमें अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियां आदि अनेक हानिकारक मत व बातें सम्मिलित हो गयीं। वेद के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को पंच–महायज्ञों का करना अनिवार्य था। जिसमें प्रथम ईश्वरोपासना तथा उसके पश्चात दैनिक अग्निहोत्र का विधान था। इस अग्निहोत्र के विस्तार – गोमेध, अजामेध, अश्वमेध आदि अनेक यज्ञ थे। मध्यकाल में विद्वानों के वेद मन्त्रों के गलत अर्थ व व्याख्याओं से यज्ञों में पशुओं का वध होने लगा और उनके मांस से यज्ञों में आहुतियां दी जाने लगीं। वेदों के अनुसार हमारा समाज गुण, कर्म व स्वभावों के अनुसार चार वर्णों में विभक्त था। महाभारत के पश्चात मध्यकाल में इन वर्णों को गुण–कर्म–स्वभाव के आधार पर न मानकर जन्म पर आधारित माना जाने लगा था। कालान्तर में एक वर्ण में ही जन्म के आधार पर अनेक जातियों की रचना हुई और लोग परस्पर, जो वेदों के अनुसार समान थे, उनमें छोटे–बड़े व ऊंच–नीच का भेदभाव उत्पन्न हो गया। स्त्री व शूद्रों को वेदों के अध्ययन से वंचित कर दिया गया। महाभारत से पूर्व वैदिक काल में सबके लिए अनिवार्य गुरूकुल की शिक्षा व्यवस्था ध्वस्त हो गई। महाभारत के बाद अपवाद स्वरूप ऐसे कम ही उदाहरण होंगे जहां सभी वर्णों के लोग आचार्य से वेदों का अध्ययन कर पाते थे। स्त्रियों की शिक्षा का कोई गुरूकुल या शिक्षा केन्द्र तो सन् 1825 व महर्षि दयानन्द के वेद प्रचार काल में देश व विदेश में कही अस्तित्व में नहीं था। एक प्रकार से गुरूकुल व्यवस्था का ध्वस्त होना और चार वर्णों में समानता समाप्त होकर विषमता का उत्पन्न होना ही देश की पराधीनता और सभी अन्धविश्वासों व कुरीतियों का कारण था। ऐसे समय में कि जब सामाजिक असामनता चरम पर थी, यज्ञों में हितकारी निर्दोष व मूक पशुओं को मार कर खुलकर हिंसा की जाती थी, उनके मांस से यज्ञ किए जाते थे और मांसाहार किया जाता था, तब भगवान बुद्ध का आविर्भाव हुआ। उन्होंने पशु हिंसा और सामाजिक असामनता का विरोध किया। उन्हें बताया गया कि पशु हिंसा का विधान वेदों में है। इस पर उनका उत्तर था कि ऐसे वेद जो पशु हिंसा का विधान करते हैं, वह अमान्य हैं। उन्हें बताया गया कि वेदों की रचना तो साक्षात् ईश्वर से हुई है जिसने यह सारा संसार बनाया है, तो इस पर उन्होंने कहा कि मैं ऐसे ईश्वर को भी नहीं मानता। भगवान बुद्ध पूर्ण अहिंसक व शाकाहारी थे। पशुओं की हिंसा और हत्या से उनको महर्षि दयानन्द के समान आत्मिक दुःख होता था। वह मानव हितकारी अनेकानेक विषयों के ध्यान व चिन्तन में संलग्न रहते थे। लोगों को उनकी यह बातें पसन्द आई। लोग उनके अनुयायी बनने लगे। उनकी शिष्य मण्डली बढ़ती गई और उनके द्वारा प्रचार से देश व विश्व में उनके अनुयायियों की संख्या बहुत अधिक हो गई। बौद्ध एवं जैन मत ने ईश्वर के अस्तित्व व उसकी उपासना का त्याग कर दिया था। यह सत्य का अपलाप था। ऐसी स्थिति का होना वेदानुयायियों के लिए चिन्ता का विषय बन गया। इसकी एक प्रतिक्रिया यह हुई कि बौद्धों व जैनियों की देखा–देखी वेद मतानुयायियों = आर्यो में भी मूर्ति पूजा का प्रचलन हो गया। एक के बाद एक अन्ध विश्वासों में वृद्धि होती रही और अतीत का वैदिक धर्म कालान्तर में वेदों के विपरीत कुछ वैदिक व कुछ अवैदिक अथवा पौराणिक मान्यताओं का मत बन कर रह गया।

यह सर्व विदित है कि भगवान बुद्ध और जैन मत के प्रवर्तक स्वामी महावीर ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते थे जिसकी चर्चा हमने उपर्युक्त पंक्तियों में भी की है। उन्होंने–अपनी अपनी कल्पायें की और उसी पर उनका मत स्थिर हुआ। ऐसा होने पर नास्तिकता के बढ़ने व धर्म–अर्थ–काम व मोक्ष के बाधित होने से वैदिक मत के शुभ चिन्तक व उच्च कोटि के ईश्वर भक्त विद्वानों में चिन्ता का वातावरण बन गया। ऐसे समय में एक दिव्य पुरूष स्वामी शंकराचार्य जी का आविर्भाव होता है। वह भारत के दक्षिण प्रदेश में जन्में और उन्होंने अनेक वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन किया जिससे वह अपने समय के सबसे अधिक तार्किक विद्वान तथा वेदान्त, गीता व उपनिषदों के सबसे बड़े विद्वान बने। उन्होंने जब बौद्ध मत व जैन मत के सिद्धान्तों का अध्ययन किया तो उन्हें ईश्वर के अस्तित्व को न मानने का सिद्धान्त असत्य व अनुचित लगा। सत्य का प्रचार व असत्य का खण्डन ही मनुष्यों का कर्तव्य भी है और धर्म भी। अतः इस धर्म का पालन करने के लिए उन्होंने तैयारी की। उन्होंने इन नास्तिक मतो के खण्डन के लिए अद्वैतवाद की विचारधारा को स्वीकार किया जिसके अनुसार संसार में केवल एक चेतन सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, निराकार तत्व–पदार्थ–सत्ता का ही अस्तित्व है जिसे ईश्वर–परमात्मा आदि नामों से जाना जाता है। उन्होंने कहा कि हमें यह जो संसार दिखाई देता है वह हमारी बुद्धि के भ्रम के कारण दिखाई देता है जबकि उसका यथार्थ या वास्तविक अस्तित्व है ही नहीं। उन्होंने वा उनके अनुयायियों ने इसका एक उदाहरण दिया कि जैसे रात्रि के अन्धेरे में वृक्ष पर लटकी हुई रस्सी सांप प्रतीत होती है, ऐसे ही यह संसार हमें वास्तविक प्रतीत हो रहा है जबकि इसका अस्तित्व है ही नहीं। यह हमारा अज्ञान व भ्रम है। इसी प्रकार से उन्होंने सब प्राणियों को ईश्वर का ही अंश बताया और कहा कि इसका कारण अज्ञान है।

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

अज्ञान जब दूर होगा तो जीव ईश्वर में समाहित होकर उसमें लीन हो जायेगा अर्थात् मिल जायेगा और तब जीव वा जीवात्मा का अस्तित्व नहीं रहेगा।

हमने भगवान बुद्ध व भगवान महावीर के ईश्वर के अस्तित्व को न मानने के सिद्धान्त की चर्चा की है। ऐसा उन्होंने ईश्वर के बनाये या दिये गये ज्ञान वेद व इनके नाम पर हिंसा के व्यवहार के कारण किया था। हमें लगता है कि इसके लिए यह आवश्यक था कि वेद के नाम पर यज्ञों में जो हिंसा होती थी उसका खण्डन किया जाता और वेदों का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत किया जाता। इसके साथ ही ईश्वर को सृष्टि, समस्त प्राणियों तथा वेद ज्ञान का रचयिता सिद्ध किया जाता। परन्तु ऐसा नहीं किया गया। यह तो कहा गया कि ईश्वर का अस्तित्व है और उसे तर्कों से सिद्ध किया गया जिससे नास्तिक मत पराभूत हुए, परन्तु वेदों पर पशुओं की हत्या व हिंसा करने जो आरोप थे और जिस हिंसा की प्रेरणा ईश्वर ने वेदों के द्वारा की गई बताई जा रही थी, उनका खण्डन व वेदों के सत्य अर्थों का प्रकाश व उनका मण्डन नहीं किया गया। इस कारण ईश्वर व वेदों पर हिंसा की प्रेरणा करने के आरोप स्वामी शंकराचार्य जी के शास्त्रार्थ के बाद भी यथावत् बने ही रहे। क्या यह नहीं किया जाना था या इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी? हमें लगता है कि यह कार्य अवश्य किया जाना चाहिये था परन्तु स्वामी शंकराचार्य जी के अल्पकालिक जीवन व अन्य अनेक कारणों से सम्भवतः वह ऐसा नहीं कर सके थे। हमने इसके लिए अपने एक मित्र के साथ स्वामी शंकराचार्य जी के अनुयायी, एक उपदेशक विद्वान से भी चर्चा की। इससे हमें यह ज्ञात हुआ कि स्वामी शंकराचार्य जी ने यज्ञ में हिंसा उचित है या अनुचित, इस भीष्म प्रश्न पर ध्यान नहीं दिया अर्थात् इसकी उपेक्षा की। इसका परिणाम यह हुआ कि यज्ञों के सत्य स्वरूप, उनका पूर्णतः अंहिसात्मक होना, का प्रचार न हो सका और जो चल रहा था वह प्रायः चलता रहा या कुछ कम हुआ। इसी कारण वेदों का महत्व भी स्थापित न हो सका और उनका संरक्षण व रक्षा न हो सकी। स्वामी दयानन्द के जीवनकाल सन् 1825–1883 तक आते–आते देश में वेदों की उपलब्धि प्रायः विलुप्ति व अप्राप्यता की सी हो गई थी जिसकी खोज महर्षि दयानन्द ने अपने अद्भुत ब्रह्मचर्य के तप, विद्या व पुरूषार्थ से की। यदि वह, वह न करते जो उन्होंने किया, तो हमें लगता है कि वेद सदा–सर्वदा के लिए विलुप्त व अप्राप्य हो जाते। आज हमें वेद व उनके मन्त्रों के सत्य अर्थ उपलब्ध हैं, वह महर्षि दयानन्द के तप व पुरूषार्थ का परिणाम है और इसका पूर्ण श्रेय उन्हीं को है। मानव जाति के लिए यह कार्य इतना हितकारी हुआ है कि जिसकी प्रंशसा के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। यदि वह यह कार्य न करते तो, ऐसी अवस्था में, सब मत–मतान्तरों की मनमानी चलती रहती। उनके द्वारा वेदों की प्रमाणिक पाण्डुलिपियों की खोज, उनके पुनरूद्धार व सत्य व यथार्थ वेदार्थ अथवा वेद भाश्य से लोगों को ईश्वर के सत्य स्वरूप का ज्ञान हुआ और साथ ही जीवात्मा, कारण प्रकृति व कार्य प्रकृति के भेद व अन्तर का पता भी चला। महर्षि दयानन्द प्रदत्त यह त्रैतवाद का सिद्धान्त ही वास्तविक, यथार्थ, सत्य व निर्भ्रान्त सिद्धान्त है। महर्षि दयानन्द द्वारा किए गये वेदों के भाष्य, वैदिक रहस्यों के उद्घाटन व सिद्धान्तों एवं मान्यताओं के प्रकाशन से सभी मत–मतान्तरों में मिश्रित असत्य, अज्ञान व मिथ्या मान्यताओं व सिद्धान्तों का ज्ञान समाज में उद्घाटित हुआ। हम समझते हैं कि यह महर्षि दयानन्द की संसार को बहुमूल्य व दुर्लभ देन है। इसके लिए महर्षि दयानन्द विश्व समुदाय की ओर से अभिनन्दनीय है।

इस लेख में हम यह कहना चाहते हैं कि स्वामी शंकराचार्य जी ने नास्तिकता का खण्डन किया और ईश्वर के अस्तित्व व स्वरूप का अपनी विचारधारा के आधार पर मण्डन किया। देश, काल व परिस्थितियों के अनुरूप उनका यह कार्य बहुत सराहनीय था। इसके अतिरिक्त ईश्वर व वेदों पर पशु हत्या की प्रेरणा देने और पशु के मांस से यज्ञ करने का जो मिथ्या दोष, यज्ञकर्ताओं के मिथ्याज्ञान व स्वेच्छाचारिता के कारण, लगा था, उसका परिमार्जन स्वामीजी शंकराचार्य जी ने नहीं किया। सम्भवतः इसी कारण वेदों का समुचित संरक्षण भी उनके व बाद के समय में नहीं हो सका। वेदों पर लगाये गये वेदेतर मतावलम्बियों के मिथ्या अनेक दोषों का खण्डन, वेदों के सत्य अर्थों का प्रकाशन व वेदों के ईश्वर से उत्पन्न, हल काल में इनके प्रासंगिक, उपयोगी व अपरिहार्य होने का मण्डन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन काल में किया जिसके लिए वह सर्वतोभावेन प्रंशसा व अभिनन्दन के पात्र हैं। उन्होंने न केवल वेदों का पुनरूद्धार ही किया अपितु वेद मन्त्रों के सत्य अर्थों को प्रकाशित कर हमें प्रदान किया। उन्होंने विश्व के सभी मनुष्यों को उनके वेदार्थों की परीक्षा करने की व्याकरण की आर्श प्रणाली, अष्टाध्यायी–महाभाष्य–निरूक्त पद्धति भी हमें प्रदान की है, जिसके लिए सारी मानवजाति इस सृष्टि के प्रलय होने तक उनकी कृतज्ञ रहेगी। आज यदि स्वामी भांकराचार्य जी होते तो वह निश्पक्ष व न्याय के पक्षधर होने के कारण महर्षि दयानन्द के कार्यों के सबसे बड़े प्रशंसक होते। इन्हीं शब्दों के साथ हम इस लेख को विराम देते हैं

–पताः 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

गौ हत्या-बूचड़खानों के विरोध में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का प्रदर्शन

रविवार, 21 सितम्बर 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य के नेतृत्व में नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर गौ हत्या व बूचड़खाने बन्द करने की मांग को लेकर विशाल प्रदर्शन का आयोजन किया गया। आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी, श्री महेन्द्र भाई, श्री रामकुमार सिंह, श्री प्रवीन आर्य, श्री चतरसिंह नागर, स्वामी चन्द्रवेश जी, श्री अनिल हाण्डा, श्री सुरेश आर्य आदि ने सम्बोधित किया।

आर्य समाज रोहिणी का उत्सव व आर.के.पुरम का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 14 सितम्बर 2014, आर्य समाज, सैक्टर–7, रोहिणी, दिल्ली का उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। डा.अनिल आर्य ने उदबोधन दिया। चित्र में श्रीमती रचना आहुजा व श्रीमती डा. विजयप्रभा अग्रवाल का स्वागत करते श्रीमती उर्मिला आर्या, डा. रचना विमल दूबे, सरोजनी प्रभाकर व श्रीमती विजय आर्या। द्वितीय चित्र रविवार, 28 सितम्बर 2014, आर्य समाज, आर. के. पुरम, सैक्टर–3, नई दिल्ली में सम्बोधित करते डा. अनिल आर्य। डा. पूर्णसिंह डबास, आचार्य ब्रह्मदेव जी, आचार्या अल्का आर्या, श्री चतरसिंह नागर, श्री विजय गुप्त आदि ने सम्बोधित किया। श्री के.पी.सिंह ने संचालन व श्री भूमेश कुमार गौड ने आभार व्यक्त किया।

फरीदाबाद के श्री विद्याभूषण आर्य सम्मानित व दक्षिण दिल्ली की बैठक सम्पन्न

परिषद् के राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर फरीदाबाद के श्री विद्याभूषण आर्य को ''आर्य युवा रत्न'' से सम्मानित करते स्वामी आर्यवेश जी, श्री मनोहरलाल चावला, श्री महेन्द्र भाई व श्री रामकुमार सिंह। द्वितीय चित्र में रविवार, 28 सितम्बर 2014, आर्य समाज, किदवई नगर, नई दिल्ली में दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल की बैठक में बाये से महामंत्री श्री चतरसिंह नागर, प्रधान श्री रविदेव गुप्ता, डा.अनिल आर्य, डा.जे.पी.गुप्ता व श्री विनोद कद।

श्री दुर्गाप्रसाद कालरा को स्मरण किया

आर्य समाज, प्रशान्त विहार, दिल्ली के पूर्व प्रधान श्री दुर्गाप्रसाद कालरा की पहली पुण्य तिथि पर यज्ञ व सत्संग का आयोजन किया गया। श्री शिवनारायण शास्त्री, श्री धर्मपाल आर्य, श्री कृष्णचन्द पाहुजा, श्री उमेश कुमार–अलवर, श्री नरेश खन्ना, श्री सूरज गुलाटी, श्रीमती सुरेश हसीजा आदि ने उन्हें स्मरण कर श्रद्वासुमन अर्पित किये।

– विनोद कालरा

श्री ओमप्रकाश सचदेवा प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज,सैक्टर–6,करनाल के चुनाव में प्रधान–श्री ओमप्रकाश सचदेवा,मन्त्री–श्री वेदप्रकाश आर्य व कोषाध्यक्ष–श्री राजपाल आर्य चुने गये। हार्दिक बधाई।

वधु चाहिये

फरीदाबाद के श्री भवनीत त्रेहण के लिये वधु चाहिये, आयु–33 वर्ष, एल.आई.सी. में कार्यरत। सम्पर्क करें – 09899938181

अजमेर हवाई अड्डे का नाम महर्षि दयानन्द के नाम पर रखो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने केन्द्र सरकार से मांग की है कि अजमेर के किशनगढ़ हवाई अड्डे का नाम करण महर्षि दयानन्द के नाम से किया जाये, क्योकि अजमेर में महर्षि दयानन्द का 1883 में दीपावली के दिन बलिदान हुआ था, डा.मोक्षराज ने भी केन्द्रीय उड्डयन मन्त्री को पत्र लिखा है । सभी आर्य समाजें अविलम्ब प्रधान मन्त्री के नाम पत्र भेंजे। **–महेन्द्र भाई**

शोक समाचार-विनम्र श्रद्धांजलि

1. वैदिक विद्वान आचार्य राजवीर शास्त्री, आयु 76 वर्ष का गत दिनों निधन।
2. श्री रघुवरदयाल शर्मा, किदवई नगर, दिल्ली का गत दिनों निधन।
3. श्रीमती गोमती देवी जैन (विश्व हिन्दू परिषद्) का निधन।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

स्वामी अग्निवेश जी के 75वें जन्मोत्सव पर गौ हत्या के विरोध में प्रदर्शन

रविवार, 21 सितम्बर 2014, सर्वधर्म संसद के तत्वावधान में नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर गौ हत्या व जीव हत्या के विरोध में विशाल धरने–प्रदर्शन का आयोजन किया गया। केन्द्र सरकार से मांसाहार निर्यात बन्द करने की अपील की गई। केन्द्रीय मंत्री श्री अरूण जेतली से भेंट कर ज्ञापन दिया गया, उन्होंने गौवंश की रक्षा के लिये यथोचित कार्यवाही करने का आश्वासन दिया। धरने को स्वामी अग्निवेश जी, डा. अनिल आर्य, आचार्य हनुमन्त जी, स्वामी आर्यवेश जी, जैन मुनि लोकेश जी, स्वामी चक्रपानी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी विश्वानन्द जी, श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री भारतेन्द्र, श्रीमती गायत्री मीना आदि ने सम्बोधित किया गया। श्री मनुसिंह ने संचालन किया। श्री सौरभ गुप्ता, श्री अरूण आर्य, श्री विमल आर्य, श्री शिवम मिश्रा, श्री माधव आर्य, श्री अनुज आर्य, श्री राकेश आर्य आदि ने व्यवस्था सम्भाली।

लवजिहाद के विरोध में युनाईटेड हिन्दू फ्रण्ट का प्रदर्शन

मंगलवार, 23 सितम्बर 2014, युनाईटेड हिन्दू फ्रण्ट के तत्वावधान में लवजिहाद के विरोध में नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर विराट प्रदर्शन का आयोजन किया गया। महन्त श्री नारायण गिरी जी, श्री जयभगवान गोयल, डा. अनिल आर्य, श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, स्वामी ओम जी आदि ने सम्बोधित किया।

आर्य समाज नगर शाहदरा का 60वां वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 28 सितम्बर 2014, आर्य समाज, नगर शाहदरा, दिल्ली का 60 वां वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। समाज के प्रधान श्री रणबीर आर्य को सम्मानित करते मुख्य अतिथि डा. अनिल आर्य, साथ में माता सुशीला आर्या, श्री यशोवीर आर्य, श्री रामकृष्ण शास्त्री, श्री महेन्द्र भाई, श्रीमती नीलम राठी, बहरोड़ व द्वितीय चित्र में श्री ऋषिराज वर्मा का स्वागत करते डा. अनिल आर्य, श्री रणबीर आर्य व श्री महेश भार्गव। समारोह का संचालन श्री संजय आर्य ने किया तथा मन्त्री श्री राजीव कोहली ने आभार व्यक्त किया। आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया।

भाजपा नेता प्रो.जगदीश मुखी व श्री हरबंसलाल कोहली का अभिनन्दन

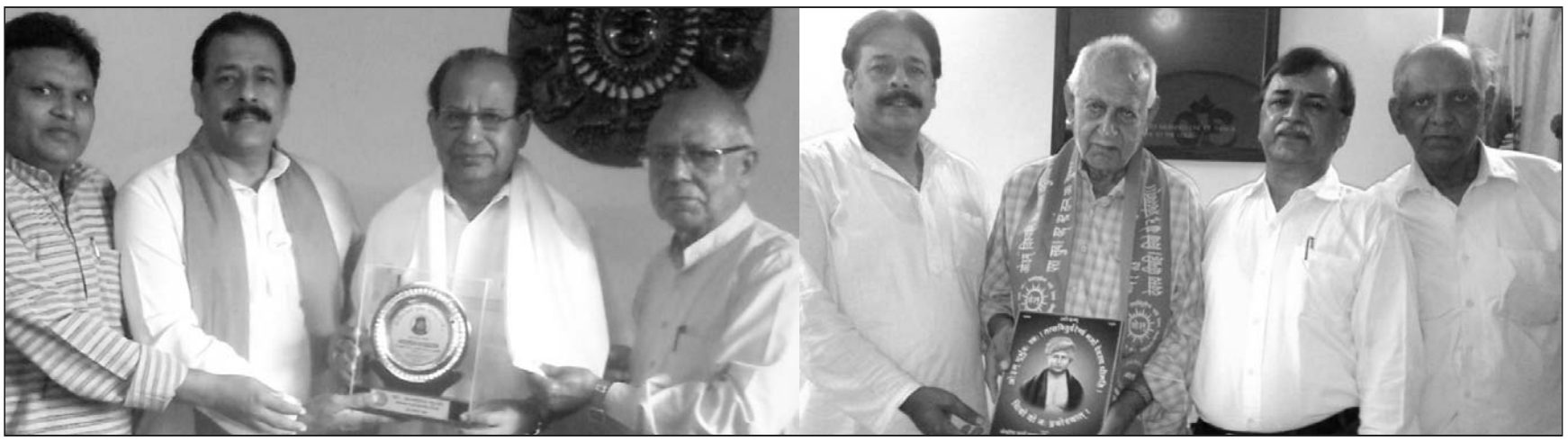

भाजपा के वरिष्ठ नेता डा. जगदीश मुखी का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, श्री रामकृष्ण सतीजा व श्री जीवनप्रकाश शास्त्री। द्वितीय चित्र में भारतीय शुद्धिसभा के प्रधान श्री हरबंसलाल कोहली का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, श्री ओम सपरा व श्री सुदेश भगत।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970